क्या कोई वस्तु है जो आपको लगातार एक सी खुशी दे सकती हो? बिलकुल नहीं! काल्पनिक होने के कारण किसी भी मायिक वस्तु से मिलने वाला सुख प्रतिक्षण घटमान होता है। उसी वस्तु से पहले अधिक सुख, फिर कम, फिर और कम फिर खतम फिर वही वस्तु दुःख देने लगती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अपने से आगे वाले को देखकर भी सुख की अनुभूती समाप्त हो जाती है। किसी के पास मारूती कार है। वो जब मर्सिडिज देखता है तो सोचता है अपनी वाली भी कोई कार है? वो कार बढ़िया है। यही हाल सब मायिक वस्तुओं का है।

भुख हो तो खाने में सुख है। प्यास हो तो पानी में सुख है। कामेच्छा हो तो कामिनी में सुख है। मानो किसी को भुख लगी हो। एक रोटी खायी बहुत अच्छा लगा। भुख कम हो गयी। दुसरी रोटी खायी। कम अच्छा लगा। भुख और कम हो गयी। तिसरी रोटी खायी। भुख खतम हो गयी। चौथी रोटी जबरदस्ती जैसे तैसे खायी। कोई सुख की अनुभूती नही हुई। पाचवी रोटी खाने को कहो तो कहेगा अब उल्टी होगी। लो! रोटी अब दुःख देने लगी। भुख खतम, सुख खतम। रोटी, मेवा, नमकिन, मिठाई सब का यही हाल है। इसका मतलब यह है कि खाने में सुख नही है। लेकिन खाना शरीर के लिए जरूरी है।

ईसी प्रकार हमारे जिंदा रहने के लिए अन्न, पानी, कपडा, मकान उपयोगी है। ये संसार हमे उपयोग के लिए दिया गया है कि इसका उपयोग करके ईश्वरीय सुख प्राप्त कर लो। लेकिन हम तो उसी में सुख मान कर उसका उपभोग करने लगे।

कोई भी मायिक वस्तु में आपको पूरी तरह से संतुष्ट करने की क्षमता नहीं है, वस्तु चाहे कितनी भी प्रतिष्ठित क्यूं न हो! चाहे कितनी भी बड़ी मात्रा में क्यूं न हो! किसी भी वस्तु के माध्यम से प्राप्त खुशी धीरे-धीरे कम हो जाती है। तो उस खुशी की तलाश क्यों न करें जो आपके साथ हमेशा के लिए रहेगी?

आपको यह महसूस करना होगा, "जब तक कि हमको भगवान वाली खुशी प्राप्त नहीं होती है, तब तक हम कभी भी आराम

नहीं कर पाएंगे।" सच्चाई यह है कि आपका उद्देश्य हमेशा अनंत एवं शाश्वत खुशी या आनंद प्राप्त करना रहा है। आप कभी भी सीमित आनंद नहीं चाहते है। सिर्फ इतना है कि आप आनंद गलत जगह ढूंढ रहे है। आप आनंद वहा ढूंढ रहे है जहा वो है ही नही। अनंत एवं शाश्वत आनंद संसार में नही बल्कि भगवान में है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132